शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय धर्म का आधार संस्कार

डॉ. सुनीता कुमारी
सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय
राँची, झारखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य जीवनभर संस्कार का संचय करता है। एक प्रसिद्ध उक्ति है 'जायते जन्मना: शूद्र संस्कारात द्विज उच्यते अर्थात व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, संस्कार उसे दूसरा जन्म देते हैं संस्कार का आशय है शुद्धिकरण। मनुष्य जीवन में अनेक वस्तुओं का उपभोग उसे शुद्ध करने के बाद करता है। अनाज का संस्कार, सब्जी का संस्कार, धातु संस्कार में अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है। उसी प्रकार मन का संस्कार भी होता है। भारत की ऋषि परंपरा ने मनुष्य जीवन को संवारने की अनेक विधियां बतायी हैं उनमें संस्कार मुख्य है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति स्वयं को संस्कारित करता रहता है। प्रशुत शोध पत्र में भारतीय धर्म में संस्कार के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

भूमिका

हिन्दू धर्म की संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है। ऋषि मुनियों ने मानव जीवन को पवित्र एवं मर्यादित बनाने के लिए संस्कारों का आविष्कार किया। संस्कार शब्द का मूल अर्थ है- 'शुद्धीकरण' अर्थात् मन वाणी और शरीर का संयम। हमारी सारी प्रवृत्तियों का संप्रेरक हमारे मन में पलने वाला संस्कार होता है। ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है किन्तु इस ग्रंथ के कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भधान और अंत्येष्टि से संबंधित कुछ धार्मिक कर्मों का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में केवल यज्ञों का उल्लेख है इसलिए इस ग्रंथ में संस्कारों की विशेष जानकारी नहीं मिलती। अथर्ववेद में विवाह, अंत्येष्टि और गर्भाधान संस्कारों का पहले से अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। गोपथ और शतपथ ब्राह्मण में उपनयन गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों था उल्लेख मिलता है। तैत्तरीय उपनिषद् में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य की दीक्षांत शिक्षा मिलती है। कुमारिल ने तंत्रवार्तिक ग्रंथ में मनुष्य के योग्य बनने के दो प्रकार बताए हैं - 1) पूर्व कर्म के दोषों को दूर करने तथा 2) नए गुणों का उत्पादन करके। संस्कार ये दोनों ही काम करते हैं। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रकृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है। ये संस्कार मनुष्य के इस जीवन को ही पवित्र नहीं करते बल्कि उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते हैं।

भारतीय धर्म में संस्कार

हमारे भारतीय धर्म के अनुसार 16 संस्कारों के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिष्कार किया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के सोलह संस्कारों होते हैं - गर्भधान संस्कार,

पुंसवन, सीमांतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कणवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, केशान्त, समावर्त्तन, विवाह, अंत्येष्टि आदि। व्यास स्मृत्ति में इन सोलह संस्कारों का वर्णन मिलता है।

भारत की जनसंख्या के 79.8 प्रतिशत लोग हिन्दू धर्म का अनुसरण करते हैं। 15.23 प्रतिशत इस्लाम, 0.70 प्रतिशत बौद्ध धर्म, 2.3 प्रतिशत ईसाई धर्म, 1.72 प्रतिशत सिक्ख धर्म को मानते हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ धार्मिक विविधता और धार्मिक सहिष्णुता को कानून तथा समाज दोनों द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। भारत विश्व की चार प्रमुख धार्मिक परम्पराओं का जन्मस्थान है- हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा सिख धर्म। भारतीयों का एक विशाल बहुमत स्वयं को किसी न किसी धर्म से संबंधित अवश्य मानता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिशय भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं -

"हालाँकि वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर-हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहाँ सभी धर्म समान हैं।"**1**

भारतीय जीवन परम्परा में चार पुरूषार्थों की कल्पना की गई है - धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। इन्हें जीवन का मूल तत्व कहा जाता है। इन्हें प्राप्त कर लेना मानव जीवन की वास्तविक उपलब्धि कही जा सकती है।

हिन्दू धर्म में धर्म का सार निम्नलिखित रूप में बताया गया है -

"आत्मनः प्रतिकुलानि, परेषाम न समाचरेत" अर्थात् जो आचरण या व्यवहार स्वयं के लिए पसंद न हो वैसा आचरण दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए। सच कहा जाय तो - "अच्छी बातों को व्यवहार में लाना ही धर्म है।" हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार रामचरितमानस तथा भगवद्गीता, इस्लाम धर्म के अनुसार पवित्र पुस्तक कुरान, बौद्ध धर्म के अनुसार त्रिपिटक. जैन धर्म के अनुसार गुरू ग्रंथ साहब और ईसाई धर्म के अनुसार बाइबल को सर्वोच्च धार्मिक ग्रंथ की मान्यता दी गई है।

भारत में अपने घर एवं बाहर अनेक देवी-देवताओं की प्रार्थना करते हैं। प्रत्येक जाति के विशिष्ट देवी-देवता मन्दिर और देवस्थान हैं। यज्ञ ही भारतीय लोगों के धर्म का मुख्य अंग हैं। पत्रों से जल छिड़कने, देवी-देवताओं को विशेष भोग चढ़ाने से लेकर पशु तक के रूप में यज्ञ किया जाता है। यज्ञ के द्वारा वर्षा, नदी और रोगों को दूर करने वाले देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है।

प्राणी मात्र और प्रकृति की सेवा का भाव सनातन धर्म की पूजा-पद्धति और मान्यताओं में समाहित है। कहा जाता है कि मानवता की सेवा करने वाले हाथ उतने ही धन्य होते है जितने परमात्मा की प्रार्थना करने वाले अधर।

संस्कार मानव जीवन के प्रथम चरण से प्रारंभ होता है जो मनुष्य के अन्दर पहले से विद्यमान दुर्गणों को निकालकर उनकी जगह सदगुणों का आधान कर देने का नाम है। हिन्दू परिवारों में जन्म से लेकर मुत्युपर्यंत संस्कारों का विधान प्राचीन धर्म-शास्त्रों के अनुसार किया गया है। इस सम्बन्ध में सावित्री चन्द्र का यह कथन द्रष्टव्य है- "प्रत्येक मनुष्य का जीवन तथा व्यवहार उसके सामाजिक परिवेश एवं उनसे प्राप्त नैतिक, भावात्मक एवं परम्परागत संस्कारों पर आधारित रहता है। यह आदान-प्रदान एक पक्षीय नहीं है। प्रत्येक मान का जीवन जहाँ समाज में प्रचलित मान्यताओं, विश्वासों, त्योहारों एवं जीवन दर्शन

से नियंत्रित होता है सर्वोच्च साथ ही वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवहार एवं सहानुभूति से उन परम्परागत संस्कारों को चालित तथा परिवर्तित करता हुआ समाज के लिए नए तथा उन्नत आदर्शों को प्रतिष्ठापित करता है।

वैसे हमारा देश संस्कार प्रधान देश है। यहाँ के प्रत्येक प्राणी में प्रत्यक्ष-परोक्ष कम-ज्यादा संस्कार होते हैं। फिर भारत के ऋषि सन्त के विशेष रूप से संस्कारित होते हैं। वे अपनी साधना के समय में से भी समय निकालकर समाज को संस्कारित करने का प्रयत्न करते हैं। अपने देश कुल एवं ऐतिहासिक पुरूषों की संस्कृति, उत्तम परम्पराओं को जीवित बनाए रखने की भावना ही संस्कार है।

"संस्कार शब्द चमकना, पौलिश-क्रान्तिसूचक अर्थ में है। वह बाहरी स्वच्छता और शुद्धि का नहीं बल्कि मानव हृदय की उस चमक या शोभा का द्योतक है, जिसमें मनुष्य का रहन-सहन, भाव, बुद्धि तथा व्यक्तित्व समाज में दीप्त हो उठते है।"**2**

भारतीय संस्कृति का झुकाव आध्यात्मिकता की ओर रहा है। मनुष्य जीवन का परम एवं अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति माना गया है। मनुष्य के कर्मों के अनुसार ही स्वर्ग-नरक की प्राप्ति व पुनर्जन्म की कल्पना की गई है। अपौरूषेय वेदों को मानव के कर्त्तव्य निर्धारण का आधार स्वीकार किया गया है। चार युगों, चार वर्णाश्रमों की अवधारणा तथा उसके अनुसार निर्धारित कर्त्तव्यों के पालन को धर्म माना गया है-

"वेदोखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले बच तद्विदाम।
आचार श्चैव, साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च।"

अर्थात् सम्पूर्ण वेद के जानने वालों की स्मृति और उनका शील धार्मिकों का आचार और अपने मन की प्रसन्नता ये धर्म के मूल हैं।"**3**

आधुनिक समय के पाश्चात्य एवं भारतीय मनीषियों ने मनुस्मृति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है एवं इसके लिखित विचारों को समसामयिक माना है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का मानना है कि - "वर्ण आश्रम सांस्कृतिक परम्परा की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। भारत की जाति और संस्थाएँ भारत और भारत के लोगों की आत्म सुरक्षा की आवश्यकता है।"**4**

मनुस्मृति में मानव जीवन के समस्त प्रश्नों में सम्यक कर्त्तव्य के निर्वाह और कर्त्तव्यों के अनुपालन को धर्म की परिधि में शामिल किया गया है। स्वामी विवेकानन्द भारतीय संस्कृति एवं धर्म के प्रति दृढ प्रतिज्ञ थे। तभी तो उन्होंने कहा था - "व्यक्तित्व ही मेरा अभीष्ट है उन्होंने अभयानंद को लिखा था, व्यक्ति का संस्कार कर सकूँ, उससे अधिक मैं कुछ नहीं चाहता।"**5**

निःसंदेह सेवा भावना मानव की ऐसी सर्वोत्तम भावना है, जो उसे पूर्णता प्रदान करती है। सेवा भाव ही मानव-जीवन का वास्तविक श्रृंगार और सौंदर्य है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाज और संस्कृति, पृष्ठ 147

2 संस्कार मंजूषा - गर्भावस्था से बचपन तक के संस्कार, आर्यिका श्री 105, विज्ञानमती माता जी, प्रकाशन, धर्मोदय साहित्य प्रकाशन, पृष्ठ 10

3 मनुस्मृति चौखम्बा संस्कृति प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, दिल्ली, 1985, अध्याय-2 श्लोक सं.- 06 पृष्ठ 17

4 विवेकानन्द, कास्ट, कल्चर एण्ड सोशलिज्य, अद्वैत आश्रम अलमोरा, 1963, पृष्ठ 18-19

5 विवेकानन्द, मूल लेखक रोम्य रोलां, अनुवादक, सं.ही. वात्स्यायन अज्ञेय, रघुवीर सहाय, लोकभारती प्रकाशन, सप्तम सं.-1989, पृष्ठ 93